भारत के वदिेशी ऋण में वृद्धि

[स्रोत: द हिंदू](#)

भारत का वदिेशी ऋण (External debt) मार्च 2023 से **39.7 बलियिन अमेरिकी डॉलर** बढ़कर मार्च 2024 के अंत तक **663.8 बलियिन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया।

- बाह्य ऋण देश के बाहर किसी स्रोत से उधार लिया गया धन है, जिसे उधार ली गई मुद्रा में चुकाया जाना होता है।
  - इसे वदिेशी वाणिज्यिक बैंकों, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं जैसे अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक एवं वदिेशी सरकारों से प्राप्त किया जा सकता है।
- सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के मुकाबले बाह्य ऋण का अनुपात **मार्च 2023 के अंत में 19.0% से घटकर मार्च 2024 के अंत में 18.7% हो गया।**
- दीर्घकालिक ऋण (एक वर्ष से अधिक समय में परिपक्व होने वाला) में **45.6 बलियिन अमेरिकी डॉलर** की वृद्धि हुई, जो **मार्च 2024 में 541.2 बलियिन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया।
  - **अल्पावधि ऋण** (एक वर्ष तक की अवधि में परिपक्व होने वाला) का अनुपात 20.6% से घटकर 18.5% हो गया।
  - वदिेशी मुद्रा भंडार में अल्पावधि ऋण का अनुपात 22.2% से घटकर 19% हो गया।
- मार्च 2024 तक भारत का वदिेशी ऋण मुख्य रूप से अमेरिकी डॉलर (53.8%), इसके बाद भारतीय रुपए (31.5%), येन (5.8%), SDR (5.4%) और यूरो (2.8%) का स्थान था।
  - **सरकारी** और **गैर-सरकारी** दोनों क्षेत्रों के ऋण में वृद्धि हुई।
- गैर-वित्तीय निगमों के पास बकाया ऋण का सबसे अधिक हिस्सा (37.4%) था, उसके बाद जमा स्वीकार करने वाले निगम (केंद्रीय बैंक को छोड़कर) (28.1%), सरकार (22.4%) और अन्य वित्तीय निगम (7.3%) थे।
- **बाह्य ऋण** में ऋण का हिस्सा 33.4% है, इसके बाद **मुद्रा और जमा (23.3%), व्यापार ऋण** और **अग्रिम (17.9%)** और **ऋण प्रतिभूतियाँ (17.3%)** हैं।

और पढ़ें: ऋण स्थिरता और विनिमय दर प्रबंधन

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/rise-of-india-s-external-debt